315hi29A

29

राज्य के गठन की ओर

राज्य ऐसा शब्द है, जिसे हम ज्यादा महत्त्व नहीं देते हैं। इससे हमारा क्या अभिप्राय होता है? प्रायः हम राज्य को सरकार के कुछ रूपों से जोड़ते हैं। सरकार के ये रूप राजतंत्र अथवा गणतंत्र अथवा कुछ मामलों में कुलीनतंत्र, अर्थात थोड़े लोगों का शासन हो सकते हैं। ये भिन्नताएं सत्ता अर्थात लोगों की प्रव त्तियों को प्रभावित और नियंत्रित करने की क्षमता के ढंग पर आधारित होती हैं, जो कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित होती हैं अथवा उसमें कई लोगों की भागीदारी होती है।

जो लोग राज्यों को नियंत्रित करते हैं, जिन्हें हम शासकों के रूप में जानते हैं, वे राजनीतिक संबंधों का निर्धारण करते हैं और विभिन्न संस्थानों के माध्यम से कार्य करते हैं। इनमें प्रशासनिक सेवाएँ शामिल हैं, जिनका उपयोग अनेक कार्यों, जैसे – राजस्व–संग्रह, सेना और न्यायपालिका के लिए किया जाता है। शासक लोगों को यह विश्वास दिलाने का प्रयास करता है कि सरकार के जिस रूप के वे प्रमुख हैं, वही सरकार आदर्श है। दूसरे शब्दों में वे राज्य के अस्तित्व को वैध बनाने का प्रयास करते हैं।

राज्यों का विकास लंबी अवधि में और भिन्न तरीकों से हुआ है। इस पाठ में हम उपमहाद्वीप की कुछ पुरानी प्रव त्तियों का पता लगाएंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- सरदारी और बादशाहत में अंतर कर सकेंगे;
- प्रारंभिक राज्यों की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे और
- कुछ प्रारंभिक राज्य किस प्रकार शक्तिशाली राज्य बन गए, इसका उल्लेख कर सकेंगे।

29.1 प ष्ठभूमि

प्रारंभिक पाठों में आपने हड़प्पा सभ्यता के बारे में पढ़ा होगा। यह अत्यधिक सुविकसित सभ्यता थी जिसमें बड़े–बड़े शहर थे, लोग विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का व्यापार करते

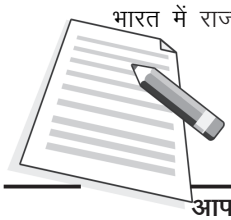

आपकी टिप्पणियाँ

थे। कुछ विद्वानों का मानना है कि हड़पा सभ्यता अवश्य ही एक राज्य–संगठन रहा होगा। इस बात की अत्यधिक संभावना है, परन्तु हमारे पास इस बात के सबूत नहीं हैं कि यह राज्य कैसा था तथा हमारे पास प्रशासनिक संस्थाओं की जानकारी भी नहीं है।

(i) प्रारंभिक वैदिक साहित्य में सरदारी

आपने प्रारंभिक पाठों (पाठ 4) में ऋग्वेद के बारे में पढ़ा है। ऋग्वेद संभवतः 1800–1000 ई.पू. के बीच लिखा गया था। यह स्रोत्रों का संग्रह है, जिसमें विभिन्न देवताओं विशेष रूप से अग्नि, इन्द्र और सोम से संबंधित स्रोत्र हैं। सामान्यतः स्रोतों की रचना पुरोहितों द्वारा की जाती थी। अक्सर बलि देते समय इनका उच्चारण किया जाता था और अनुष्ठानों हेतु देवताओं को आमंत्रित करने के लिए इनका उपयोग किया जाता था। अधिकतर स्रोतों की रचना उत्तर–पश्चिम भारत में की गई थी इस क्षेत्र में सिंधु और इसकी सहायक नदियां बहती थी।

इन स्रोतों में अन्य जानकारी भी मिलती है। इनमें उन वस्तुओं की सूचियां भी शामिल हैं, जिनके लिए लोग प्रार्थना करते थे तथा कभी–कभी इनसे हमें उस काल के प्रमुखों अथवा महत्त्वपूर्ण लोगों के नामों की भी जानकारी मिलती है।

क्या इन स्रातों से हमें राजनीतिक प्रक्रियाओं के बारे में भी जानकारी मिलती है? उत्तर है – हां। कुछ दुर्लभ उदाहरणणों को छोड़कर इन स्रोतों में हमें राजनीतिक घटनाओं के बारे में सीधी जानकारी नहीं मिलती। किंतु इन स्रोतों की विषयवस्तु का विश्लेषण कर यह समझा जा सकता है कि राजनीतिक संबंध किस प्रकार स्थापित किए गए थे।

(ii) भिन्न-भिन्न राजा

सामान्यतः जब हम राजा शब्द का उपयोग करते हैं, तो हमारे मस्तिष्क में यह विचार आता है कि राजा महलों में रहता है। उसके अनेक नौकर–चाकर होते हैं। वह अत्यधिक धनी होता है। वह विशाल सेना का सेनापति होता है और उसका दरबार होता है। अक्सर हम सोचते हैं कि राजा अपनी सत्ता अपने पुत्रों को दे देता है। संभवतः सबसे बड़े पुत्र को। परन्तु राजा शब्द का हमेशा यह अर्थ नहीं होता।

ऋग्वेद में राजा शब्द का उपयोग अनेक देवताओं के विशेषण के रूप में किया गया है। कभी–कभी इसका उपयोग शक्तिशाली व्यक्तियों का उल्लेख करने के लिए भी किया गया है। ये व्यक्ति विशाल सेना अथवा विशाल प्रशासनिक प्रणाली को नियंत्रित नहीं करते थे। इनकी शक्ति का मुख्य स्रोत शायद युद्ध में नेत त्व करने से उत्पन्न होता था। आइए देखें कि युद्ध क्यों होते थे और उसके बाद क्या होता था।

(iii) युद्ध

आपको याद होगा कि ऋग्वेद इंगित करता है कि उस काल के लोग मुख्यतः किसान थे। अतः हमें पता चलता है कि कुछ युद्ध चरागाह–भूमि को लेने के लिए होते थे। अक्सर उत्तम चरागाह–भूमि नदियों के किनारे थी। युद्ध लोगों और पशुओं दोनों के लिए जल हेतु, मवेशियों तथा भूमि हड़पने, विशेष रूप से चरागाह के लिए और जल्दी से पकने वाली फसलों, जैसे बाजरा उगाने के लिए भी होते थे। इसके अतिरिक्त स्त्रियों पर अधिकार जमाने के लिए युद्ध होते थे।

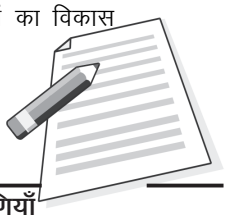

ज्यादातर पुरुष ही इन युद्धों में हिस्सा लेते थे। कोई नियमित सेना नहीं होती थी, परन्तु सभाएं होती थी, जिनमें लोग सम्मिलित होते थे और युद्ध और शांति के विषयों पर चर्चाएं की जाती थीं। वे नेताओं, बहादुरों तथा योग्य लड़ाकुओं को चुनते थे। कभी–कभी वे सफलता के लिए विशेष बलि देते थे और देवताओं से प्रार्थना करते थे।

राजा द्वारा अपने लोगों को विजय दिलवाने पर क्या होता था? जीती हुई जमीन अथवा हासिल किए गए जल–स्रोतों को संभवतः सामूहिक उपयोग के लिए रखा जाता था। अन्य वस्तुएं, जैसे मवेशी और स्त्रियां, संभवतः राजाओं के समर्थकों को दी जाती थी। इनमें से कुछ उन पुजारियों को दी जाती थी जो राजा की विजय हेतु प्रार्थना करने तथा अपने राजा को विजयी बनाने में सहायता करने हेतु देवताओं का आभार प्रकट करने के लिए बलि देते थे।

ये किससे युद्ध करते थे? ऋग्वेद में अनेक कबीलों के नाम दिए गए हैं। इनमें पौरुष यादव, भरत, अनु तथा द्रुहु सम्मिलित हैं। कभी–कभी ये कबीले परस्पर संगठित हो जाते थे, परन्तु ये एक–दूसरे से युद्ध भी करते थे। स्वयं को आर्य कहने वाले ये लोग कभी–कभी दासों अथवा दस्युओं से युद्ध करते थे।

आम आदमी के लिए दो शब्दों का प्रयोग मिलता है। एक शब्द है जन, जिसका प्रयोग आज भी हिंदी और अन्य भाषाओं में किया जाता है। दूसरा शब्द है विस। अक्सर राजा का उल्लेख जन अथवा विस के राजा के रूप में किया गया है। दूसरे शब्दों में राजा का संबंध किसी राज्य अथवा किसी निर्धारित क्षेत्र से नहीं था, बल्कि वह लोगों के एक समूह का राजा होता था।

जैसा कि हमने देखा, ये राजा वैसे राजा नहीं, जिन्हें हम जानते हैं। इन्हें अक्सर राजाओं के बजाय सरदार अथवा प्रमुख कहा जाता है तथा जिस क्षेत्र पर इनका अधिकार होता है, उसे राज्य के बजाय सरदारी अथवा प्रमुख के क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जाता था।

- प्रायः प्रमुख मुखिया का चुनाव लोगों द्वारा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है, जबकि राजा वंशानुगत होता है।
- प्रमुख के पास कोई स्थायी प्रशासनिक तंत्र नहीं होता है, जो उनकी सहायता करे; वे कुटुम्ब और अन्य अनुयायियों पर आश्रित होते हैं। जबकि राजा सहायता के लिए अपने संबंधियों पर भी निर्भर रहते हैं, इसके अलावा उनके पास प्रशासनिक प्रणाली भी होती है, जिस पर वे निर्भर रहते हैं।
- प्रमुख नियमित कर एकत्र नहीं करता, वह प्रायः उन उपहारों पर निर्भर रहता है, जो उसके अनुयायी लाते थे। राजाओं को भी उपहार मिलते थे, परन्तु उनकी आय का मुख्य स्रोत कर–संग्रहण था।
- प्रमुख स्थायी सेनाएं नहीं रखते थे। वे नागरिक सेना पर आश्रित रहते थे। अर्थात जरूरत पड़ने पर लोगों को युद्ध करने के लिए बुलाया जाता था और उन्हें नियमित रूप से वेतन नहीं दिया जाता था। राजा नागरिक सेना के रूप में लोगों को भर्ती करते रहते थे, परन्तु अक्सर वे स्थायी सेनाएं भी रखते थे।

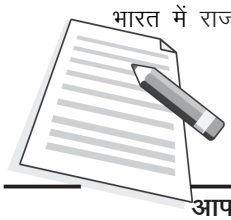

आपकी टिप्पणियाँ

- सामान्यतः प्रमुख उन सभाओं में लोगों से बातचीत करते हैं, जहाँ लोग महत्त्वपूर्ण विषयों पर अपनी राय व्यक्त कर सकते थे। राजा भी इन सभाओं में भाग लेते थे, परन्तु ऐसा औपचारिक अवसरों पर ही होता था।

पाठगत प्रश्न 29.1

1. ऋग्वेद की रचना संभवतः _____ से _____ ई.पू. के बीच हुइ थी।
2. स्रोतों में _____ घटनाओं के बारे में हमें प्रत्यक्ष जानकारी नहीं मिलती।
3. अक्सर उत्तम चरागाह भूमियां _____ के किनारों पर होती हैं।
4. स्वयं को आर्य कहने वाले लोग अन्य लोगों से युद्ध करते थे, जिन्हें वे _____ अथवा _____ कहते थे।

29.2 प्रारंभिक राज्यः जनपद

लगभग 1000 ई.पू. से 500 ई.पू. के बीच उत्तरी भारत में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएं हुईं। हम अब पाते हैं कि ऐसी अनेक बस्तियों का विकास हो चुका था, जो चित्रित धूसर म द्भांड संस्क ति से जुड़ी थीं, जिसके बारे में आप पाठ पांच में पढ़ चुके हैं। अन्य बातों के साथ–साथ क षि अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई थी, जन–समुदाय का विकास हो गया था तथा औजार और हथियार बनाने के लिए लोहे का उपयोग बढ़ गया था।

हमारे पास मूल ग्रंथों का विस्त त समूह भी है, जिसे हम उत्तर वैदिक साहित्य कहते हैं। इन ग्रंथों में धार्मिक अनुष्ठान, उनकी व्याख्या और विश्लेषण दिए गए हैं तथा यह उल्लेख किया गया है कि उन्हें प्रासंगिक रूप से कैसे निष्पादित किया जाता था। उनमें यह भी बताया गया है कि राजनीतिक संगठन का एक नया रूप, जिसे अक्सर जनपद कहा जाता है, अब अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो चला था।

जैसा कि स्पष्ट है जनपद शब्द की उत्पत्ति 'जन' शब्द से हुई थी, जैसा कि हमें मालूम है, जन का अर्थ है व्यक्ति। वास्तव में जनपद का अर्थ है वह स्थान, जहाँ लोग अपने समूह में रहने लगे थे और स्थायी रूप से बस गए थे। उस भूमि का नाम उनके नाम पर पड़ गया। उदाहरण के लिए, जिस भूमि पर कुरु बस गए थे वह भूमि कुरु जनपद कहलाने लगी।

जनपद की एक अन्य विशेषता थी। कि इन क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों को वर्ण के अनुसार वर्गीक त किया गया था चतुर्वर्णीय सामाजिक वर्गीकरण के बारे में आप पाठ चार में पढ़ चुके हैं।

29.3 राजा बनने के नए तरीके

जनपद के सरदार अथवा प्रमुख को राजा कहा जाता रहा। परन्तु कुछ महत्त्वपूर्ण ढंग थे, जिनमें यह राजा जन से भिन्न था। शुरुआत में हमें ये संकेत मिलते हैं कि कम से कम कुछ मामलों में अब राजा का पद वंशानुगत हो गया था। दूसरे शब्दों में, पुत्र वंशानुगत अथवा वैध रूप से अपने पिता के शासन पर दावा कर सकते थे।

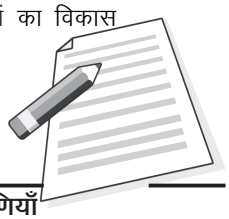

दूसरे, अब हमें विस्त त धार्मिक अनुष्ठानों का उल्लेख मिलता है, जिनमें राजसूय और अश्वमेध अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। ये काफी लंबे चलते थे, कभी–कभी तो ये एक वर्ष से भी अधिक समय तक चलते थे। केवल विशिष्ट रूप से प्रशिक्षित पुजारी ही इन्हें संपन्न कर सकते थे। वैदिक साहित्य की रचना और संकलन करने वाले पुजारियों का कहना था कि इन विस्त त धार्मिक अनुष्ठानों को संपन्न करने में सक्षम व्यक्ति को ही राजा के रूप में मान्यता प्रदान की जाएगी।

ऐसी बलियों में अनेक लोग भाग लेते थे। इनमें राजा भी सम्मिलित होता था। अपनी शक्ति की घोषणा करने का यह महत्त्वपूर्ण अवसर होता था। उसका परिवार, विशेषकर उसकी पत्नियां और उसके पुत्र इस बलि में उसकी सहायता करते थे। रथ का सारथी, पारिवारिक पुरोहित, सेनापति और दूत सहित उसके अन्य सहायक भी इसमें सम्मिलित होते थे। आम जनता विस अथवा वैश्य द्वारा राजा के लिए उपहार लाने की अपेक्षा की जाती थी, जो बलि देने के लिए आवश्यक धन से अधिक होता था। पड़ोसी राजाओं को भी इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता था। निसन्देह पुजारी ही संपूर्ण अनुष्ठान को पूरा करते थे।

क्या शुद्र इन धार्मिक अनुष्ठानों में भाग ले सकते थे? कभी–कभी उनको इन अनुष्ठानों में छोटी भूमिकाएं दी जाती थी, परन्तु अक्सर उन्हें इन धार्मिक अनुष्ठानों मे सम्मिलित नहीं होने दिया जाता था। उनमें भाग लेने वाले भी केवल अपनी भूमिका ही निभा सकते थे। उदाहरण के लिए, वैश्य पुजारी का कार्य नहीं कर सकता था, न ही राजा की पत्नी उसका स्थान ले सकती थी।

ये धार्मिक अनुष्ठान क्यों आवश्यक थे? अश्वमेध अथवा घोड़े की बलि के मामले में बलि दिए जाने वाले घोड़े को हथियारबंद लोगों के समूह के साथ एक वर्ष तक घूमने के लिए खुला छोड़ दिया जाता था। वे सब जो घोड़े को अपने राज्य में से गुजरने की अनुमति देते थे, उनके बारे में, यह समझा जाता था कि उन्होंने घोड़े के स्वामी के प्रभुत्व को मौन स्वीक ति प्रदान कर दी है।

जब घोड़े को वापस लाया जाता था, तो विस्त त धार्मिक अनुष्ठान में इसकी बलि दी जाती थी। अन्य राजाओं, पुजारियों, आम जनता सहित अनेक लोगों को इस अनुष्ठान में भाग लेने और/अथवा साक्षी होने के लिए आमंत्रित किया जाता था। भोज कराया जाता और कथा सुनाई जाती थी। दूसरे शब्दों में, यह काफी खर्चीला अनुष्ठान होता था।

ऐसा धार्मिक अनुष्ठान करने के इच्छुक किसी भी महत्त्वाकांक्षी राजा का शक्तिशाली और धनवान दोनों होना आवश्यक था। पुजारियों को बहुत अधिक बलि–शुल्क अथवा दक्षिणा दी जाती थी उसमें अन्य चीजों के अलावा घोड़े, मवेशी, सोने–चांदी की वस्तुएं, रथ, कपड़े और दास और दासियां सम्मिलित थी। अतः ऐसे धार्मिक अनुष्ठान को सफलतापूर्वक संपन्न करके राजा अपनी शक्ति की सार्वजनिक घोषणा करने के साथ–साथ अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता था। इनमें से कई धार्मिक अनुष्ठानों में अभिषेक भी सम्मिलित था। इसका अर्थ था राजा पर शुद्ध पवित्र जल छिड़कना। अक्सर पहला छिड़काव पुजारी करता था, तत्पश्चात अन्य लोग जैसे वैश्य और राजा के संबंधी भी इस प्रक्रिया में भाग ले सकते थे।

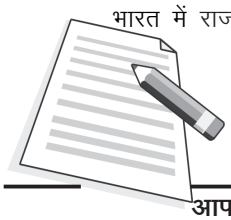

आपकी टिप्पणियाँ

जैसा कि आप देख सकते हैं, जन–सभा द्वारा राजा के चयन का कोई प्रश्न ही नहीं था। किसी राज–परिवार में जन्मा व्यक्ति ही राजा बन सकता था। या फिर वह व्यक्ति राजा बनने की कोशिश कर सकता था, जिसके पास पर्याप्त सेना और भौतिक संसाधन हो।

29.4 प्रशासनिक प्रणाली की शुरुआत

उत्तर वैदिक साहित्य में जिन धार्मिक अनुष्ठानों का बार–बार वर्णन किया गया है, उनमें से एक है, राजसूय। यदि आप महाभारत की कहानी से परिचित हैं तो आपको स्मरण होगा कि राजसूय एक महत्त्वपूर्ण यज्ञ था, जो युधिष्ठिर द्वारा सिंहासन पर अपना दावा करने के लिए किया गया था।

राजसूय के एक भाग के रूप में 'रत्नीनाम हविमासि' नामक अनुष्ठान का उल्लेख मिलता है। यह ऐसा धार्मिक अनुष्ठान है जिसमें 'रत्नीनों' (इसका शाब्दिक अर्थ है वे लोग, जिनके पास रत्न थे) के रूप में उल्लिखित महत्त्वपूर्ण लोगों के घरों में राजा चढ़ावा भिजवाता था। इन महत्त्वपूर्ण लोगों में राजा की पत्नियां, सेना नायक, मुख्य पुजारी, सारथी तथा दूत और राजा की ओर से आहार एकत्र और प्राप्त करने वाले लोग सम्मिलित थे।

इन पदाधिकारियों को दिए जाने वाले नियमित वेतनों का कोई उल्लेख नहीं मिलता। तथापि उनके कार्यों से हम पता लगा सकते हैं कि उनमें से कुछ एक केंद्र का निर्माण करते थे, जिससे बाद में प्रशासनिक प्रणाली विकसित हुई।

29.5 राजा के लिए संसाधन

हालांकि जनपद पर राज्य करने वाला राजा ऋग्वेद में उल्लिखित राजा से कई मामलों में भिन्न था पर उसकी कई विशेषताएं उसके समान भी थी। हम पाते हैं कि इस अवधि के दौरान भी राजा द्वारा संसाधन जुटाने के मुख्य तरीके युद्ध और उपहारों की प्राप्ति ही थे।

अक्सर इन उपहारों को बलि कहा जाता था, जिनकी मांग धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर की जा सकती थी उदाहरण के लिए, यदि राजा अश्वमेध यज्ञ करता था, तो वह अपने लोगों से संसाधनों की मांग कर सकता था। 'उपहार' शब्दों से लगता है कि वह स्वेच्छा से दी गई भेंट हैं, परन्तु उपहार देने के लिए लोगों को मजबूर भी किया जाता था।

हम पाते हैं कि इन ग्रंथों में राजा और प्रजा के बीच संबंधों का उल्लेख करने के लिए अनेक नई उपमाओं का उपयोग किया है। राजा का उल्लेख भोजनकर्ता अथवा हिरण के रूप में तथा प्रजा का उल्लेख 'भोजन' अथवा 'चारे' के रूप में मिलता है। इससे पता चलता है कि नियमित करों की मांग न किए जाने के बावजूद अक्सर लोगों का शोषण किया जाता था।

तथापि लोगों को राजा का समर्थन पाने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह उन्हें अन्य राजाओं से बचाने में समर्थ और इच्छुक दोनों हैं, राजा को भेंट देनी पड़ती थी।

ऋग्वेद के राजा और उत्तर वैदिक परंपरा के राजा में एक और समानता यह थी कि दोनों ही सशस्त्र सहायता के लिए नागरिक सेना पर आश्रित थे तथा आप सोच सकते हैं कि राजा स्थायी सेना रखने में समर्थ क्यों नहीं था?

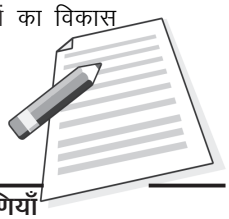

29.6 महाजनपद

लगभग 500 ई.पू. तक कुछ जनपद अन्य जनपदों की तुलना में अत्यधिक शक्तिशाली बन गए थे और अब वे महाजनपद कहलाते थे। हमें बौद्ध और जैन ग्रंथों में 16 महाजनपदों की सूची मिलती है। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण महाजनपद और उनकी राजधानियां मानचित्र में दर्शाई गई हैं (क पया पुस्तक 1 में पाठ 5 में तालिका सं. 5.1 और मानचित्र 5.1 देखें) चार जनपद विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण थे। वे थे कोसल, अवन्ति, वज्जि और मगध। इनमें से अंततः मगध सबसे शक्तिशाली जनपद बन गया। उपमहाद्वीप के इतिहास में पहला ज्ञात साम्राज्य मौर्य साम्राज्य था, जिसका केंद्र मगध में था। महाजनपद जनपदों से कई प्रकार से भिन्न थे। आइए, इनमें से कुछ भिन्नताओं पर नजर डालें।

29.7 किलेबंद शहर

लगभग सभी महाजनपदों की राजधानी होती थी। जनपदों की बस्तियों के विपरीत इनमें से कई राजधानियां किलेबंद थी। इसका अर्थ है कि इनके चारों ओर लकड़ी, ईंट अथवा पत्थर की विशाल दीवारें बनी हुई थी।

हमारे पास इन शहरों में रहने वाले लोगों के बारे में कुछ जानकारी है। इन लोगों में राजा और उसके समर्थक तथा शिल्पकार, सौदागर, व्यापारी और छोटे दुकानदार जैसे अन्य लोग सम्मिलित थे। इन शहरों में रहने वाले कुछ लोग धनी व्यक्ति थे। आज हम जिन कई शहरों को जानते हैं, वे इसी अवधि में विकसित हुए थे। इनमें मथुरा, वाराणसी, वैशाली और पाटलिपुत्र जैसे शहर शामिल हैं। इन शहरों में लोहे के औजार के उपयोग से क षि में विकास जारी रहा। जिससे अब और अधिक अनाज उत्पन्न करना संभव हो गया था।

शायद किले इसलिए बनाए गए थे कि इन शहरों में रहने वाले कुछ लोग आक्रमणों से डरते थे और उन्हें बचाव की आवश्यकता थी। यह भी संभव है कि कुछ राजा को दर्शाना चाहते थे कि वे इतने धनी और शक्तिशाली हैं कि वे अपने शहरों के चारों ओर विशाल बड़ी भव्य दीवारें बनवा सकते हैं।

ऐसी विशाल दीवारों का निर्माण करने के लिए बड़ी योजनाएं बनाने की आवश्यकता थी। लाखों नहीं बल्कि हजारों पत्थर की ईंटें बनानी पड़ी होंगी। इसके लिए पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के रूप अनेक मजदूर में उपलब्ध कराए गए होंगे। और निसन्देह इन सबका भुगतान करने के लिए धन एकत्र करना पड़ा होगा।

29.8 नई सेनाएँ

हमारे पास उपलब्ध प्रमाणों से पता चलता है कि लगभग 330 ई.पू. तक इन महाजनपदों में से कुछ में अलग–अलग ढंग से सेनाएं संगठित की गई थी। यह वह काल था जब उत्तरी ग्रीस के मकदूनिया के शासक सिकंदर ने विश्व विजय की यात्रा प्रारंभ करने का निर्णय लिया था। जैसी उम्मीद लगाई गई थी। वह विश्व पर विजय हासिल नहीं कर पाया। तथापि उसने मिस्र के भाग, पश्चिम एशिया पर विजय हासिल की तथा वह भारतीय उपमहाद्वीप में व्यास के किनारे तक आ पहुंचा।

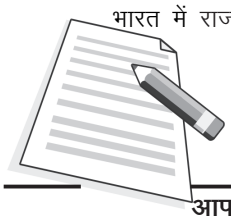

आपकी टिप्पणियाँ

जब वह पूर्व की ओर बढ़ना चाहता था तो उसके सैनिकों ने इंकार कर दिया। वे भयभीत थे क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि भारत के राजाओं के पास विशाल पैदल सैनिक, रथ और हाथी थे।

ये सेनाएं उन सेनाओं से भिन्न थी, जिनका पहले उल्लेख किया गया है। राजा द्वारा नई सेना के सैनिकों को नियमित वेतन दिया जाता था और उन्हें पूरे साल रखा जाता था। हमें यह भी पता चलता है कि हाथियों का व्यापक पैमाने पर उपयोग किया जाता था। हाथियों को पकड़ना, उन्हें पालतू बनाना और प्रशिक्षित करना मुश्किल है। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि अब सेनाएं पहले से बहुत अधिक सुसज्जित और संगठित हो गईं। ऐसी विशाल सेनाओं को रखने के लिए जनपदों की साधारण सेनाओं के लिए अपेक्षित संसाधनों से कहीं अधिक संसाधनों की जरूरत थी।

हमें बौद्ध ग्रंथों से पता चलता है कि मगध के शासकों ने सर्वोत्तम सेनाएं गठित की थी। उन्होंने राज्य के जंगलों में पाए जाने वाले हाथियों का उपयोग किया। उन्होंने अपने राज्य की खानों से प्राप्त लोहे का भी उपयोग किया। इससे सेना को मजबूत हथियार उपलब्ध कराए गए।

महत्त्वाकांक्षी शासकों के नेत त्व वाली सुसज्जित सेना का अर्थ था कि मगध का राजा शीघ्र अन्य राजाओं पर विजय प्राप्त कर सकता था और पड़ोसी राज्यों पर नियंत्रण कर सकता था। कुछ मामलों में शासकों ने प थ्वी पर और नदियों के साथ–साथ संचार के मार्गों पर नियंत्रण करने की कोशिश की। अन्य मामलों में उन्होंने भूमि पर, विशेष रूप से उपजाऊ क षि योग्य भूमि पर नियंत्रण करने की कोशिश की, चूँकि वह अधिक संसाधन प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण स्रोत थी।

पाठगत प्रश्न 29.2

रिक्त स्थान भरिए:

1. लगभग सभी महाजनपदों में एक _____ शहर था।
2. ऐसी विशाल दीवारों का निर्माण करने के लिए _____ की आवश्यकता थी
3. इन शहरों ने लोहे के औजारों के उपयोग से क षि में विकास जारी रखा। जहाँ अब _____ और अधिक _____ करना संभव हो गया।
4. सिकंदर ने मिस्र के भाग, पश्चिम एशिया पर विजय हासिल की और भारतीय उपमहाद्वीप में _____ के किनारे तक आ पहुंचा।

29.9 नियमित विभिन्न कर

चूंकि महाजनपदों के शासक विशाल किले बनवा रहे थे और बड़ी सेनाएं रख रहे थे, अतः इसके लिए उन्हें धन की नियमित आपूर्ति की आवश्यकता थी, इसलिए कर एकत्र करना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो गया था।

- फसलों पर कर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था। ऐसा इसलिए था क्योंकि ज्यादातर लोग

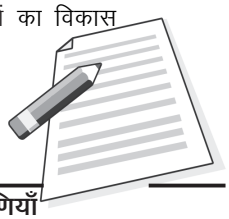

किसान थे। वे अक्सर अपनी भूमि और फसलों को बचाने के लिए राजाओं पर आश्रित रहते थे। आम तौर पर भूमि के उत्पादन का 1/6वां भाग कर के रूप में निर्धारित किया गया। यह कर 'भाग' के रूप में जाना जाता था।

- शिल्प पर भी कर लगाया गया था। यह कर श्रम के रूप में होता था। उदाहरण के लिए, एक बुनकर अथवा लुहार को प्रत्येक महीने में एक दिन सरकार के लिए काम करना पड़ता था। चरवाहों से भी कर–अदायगी अपेक्षित थी।
- व्यापार के माध्यम से खरीदी और बेची जाने वाली वस्तुओं पर भी कर लगाया जाता था।

निःसन्देह राजा को कर एकत्रित करने के लिए कई अधिकारियों और उनका वेतन देने के लिए अधिक धन की आवश्यकता थी। कुछ कर वस्तुओं, जैसे – अनाज, मवेशी अथवा शिल्पकारों द्वारा निर्मित वस्तुओं के रूप में एकत्र किए जाते थे। कभी–कभी ये कर नकद भी एकत्र किए जाते थे। वास्तव में प्रारंभ के कुछ सिक्के इसी अवधि के थे।

29.10 मगध और उसके शासक

मगध लगभग दो सौ वर्षों में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण महाजनपद बन गया था। यह आंशिक रूप से मगध की सेना के कारण हुआ था। इसके अतिरिक्त, मगध नदियों से घिरा था, जिसमें गंगा और सोन नदी सम्मिलित थी। परिवहन, जल आपूर्ति और ऊपजाऊ भूमि के लिए उनका बहुत महत्त्व था।

मगध के दो अत्यधिक शक्तिशाली राजा हुए–बिम्बिसार और उसका पुत्र अजातशत्रु, जिन्होंने प्रतिद्वंद्वियों और अन्य जनपदों पर विजय हासिल करने के लिए सभी संभावित साधनों का उपयोग किया। कभी–कभी वे अपने पड़ोसी शासकों से विवाह–संबंध स्थापित करते। अन्य मामलों में वे सेनाओं का नेत त्व करते और पड़ोसी राज्यों पर वस्तुतः विजय प्राप्त करते थे।

महापद्मनाद मगध का एक अन्य महत्त्वपूर्ण राजा था। उसने उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिमी भाग तक अपने शासन का विस्तार किया। संभव है सिकंदर के सैनिकों ने इसकी विशाल सेना के बारे में सुन रखा हो। हमने मगध के राजाओं को व्यापक–पैमाने पर बलियां देते नहीं सुना है। क्या आप सोच सकते हैं कि ऐसे विस्त त धार्मिक अनुष्ठान संपन्न क्यों नहीं किए गए?

29.11 गण संघ

एक ओर जहाँ अनेक महाजनदों पर विशिष्ट राजाओं द्वारा शासन किया जाता था। वहीं दूसरी ओर कुछ जनपद विभिन्न प्रकार की सरकार के अधीन थे और गण संघ कहलाते थे। यहाँ एक नहीं, बल्कि अनेक शासक होते थे। दिलचस्प बात यह है कि कभी–कभी हजारों व्यक्ति एक साथ शासन करते थे और उनमें से प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था।

ये राजा एक साथ धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करते थे। ये धार्मिक अनुष्ठान वैदिक बलियों जैसे नहीं थे। वे सभाओं में मिलते थे और चर्चाओं और वाद–विवादों के माध्यम से क्या

किया जाए और कैसे किया जाए, इसका निर्णय करते थे। उदाहरणणण के लिए, यदि शत्रु द्वारा इन पर आक्रमण किया जाता, तो वे इस चुनौती का सामना करने के लिए क्या किया जाए इस पर चर्चा करने के लिए अपनी सभा बुलाते थे। हम पाते हैं कि स्थायी सेनाएं रखने की बजाय सभी राजा अपने अनुचरों के साथ मिलकर आवश्यकता पड़ने पर सेना का गठन करते थे।

गण संघों की सारी जमीन के स्वामी सभी राजा मिलकर होते थे। उस पर अधिकार कर लिया जाता था। उन्हें अक्सर इस भूमि को जोतने के लिए दास और मजदूर मिलते थे, जिन्हें दास कर्मकार कहा जाता था। इन स्त्री–पुरुषों को कुछ खाना, कपड़े और मकान दिए जाते थे, परन्तु जो भी कुछ ये उत्पन्न करते, उसे राजा और उसके रिश्तेदार ले लेते थे।

सबसे अधिक प्रसिद्ध गण संघों में मल्ल और वज्जि थे। वज्जि गण संघ महाजनपद था और इसकी राजधानी प्रसिद्ध शहर वैशाली थी, बुद्ध और महावीर दोनों गण संघ के थे। गण संघों में जीवन के सजीव विवरण बौद्ध ग्रंथों में देखे जा सकते हैं।

इस प्रकार आपने देखा कि सभी महाजनपदों में समान प्रकार की सरकार नहीं थी।

पाठगत प्रश्न 29.3

1. सबसे अधिक शक्तिशाली जनपद कौन–सा था?

2. मगध की सेनाओं द्वारा मार्गों पर नियंत्रण करने के लिए परिवहन और संचार के कौन–कौन से साधन उपयोग में लाए जाते थे?

3. राजा द्वारा क षि की फसल पर कितना कर लिया जाता था?

4. मगध के किन्हीं दो शक्तिशाली राजाओं के नाम बताइए?

आपने क्या सीखा

राज्य के गठन के सूत्र प्रारंभिक वैदिक काल में ढूंढे जा सकते हैं, जब सरदारी से धीरे–धीरे राज्य के गठन का मार्ग प्रशस्त हुआ। चरागाह भूमि के लिए युद्ध के परिणामस्वरूप ऐसा हुआ। ये युद्ध एक कबीले द्वारा दूसरे कबीले से या एक कबीलाई समूह द्वारा दूसरे समूह से लड़े गए। प्रारंभिक राज्य को जनपद कहा जाता था, जिनसे धीरे–धीरे महाजनपद बने जिनमें पत्थर की चारदीवारी, अनेक नौकर–चाकर और विशाल सेनाएं होती थी। राजा अथवा प्रमुख जन कहलाने वाले सामान्य लोग कई रूपों में भिन्न थे।

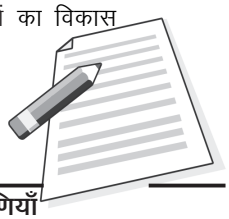

धीरे–धीरे राजा का पद वंशानुगत बन गया। उसके पास विशाल सेना होती थी जिसे रखने के लिए भारी व्यय की आवश्यकता होती थी। इस व्यय को फसलों, शिल्पों और वस्तुओं पर लगाए गए करों से पूरा किया जाता था। एक दिलचस्प संकल्पना थी, गण संघों की, जिसका अर्थ था कई राजाओं का राज्य। ये राजा मिलकर धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करते थे। वे सभाएं बुलाते और निर्णय करते कि क्या किया जाए? गण संघों की भूमि पर सभी राजाओं का संयुक्त स्वामित्व होता था।

पाठांत प्रश्न

1. ऋग्वेद क्या है?
2. युद्ध क्यों लड़े जाते थे?
3. 'सरदारी' और 'बादशाहत' में अंतर बताइए?
4. ऋग्वेद में उल्लिखित किन्हीं चार वंशों के नाम बताइए।
5. राजा बनने के नए तरीकों का उल्लेख कीजिए।
6. कर एकत्र करना क्यों महत्त्वपूर्ण था? उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

29.1

1. 1800–1000 ई.पू.
2. राजनीतिक
3. नदियों
4. दास, दस्यु

29.2

1. राजधानी
2. योजना
3. अनाज उत्पन्न करना
4. व्यास नदी

29.3

1. मगध

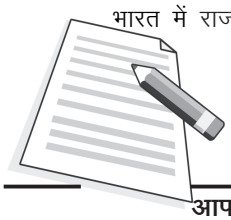

आपकी टिप्पणियाँ

2. भूमि पर और नदियों के साथ
3. 1/6
4. बिम्बिसार, अजातशत्रु और महापद्मनंद (कोई दो)

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. देखें अनुच्छेद 29.1.2
2. देखें अनुच्छेद 29.1.(iii)
3. देखें अनुच्छेद 29.1.(iii) शेष पांच बिंदु
4. देखें अनुच्छेद 29.1.(iii)
5. देखें अनुच्छेद 29.3
6. देखें अनुच्छेद 29.5